अध्याय – पंचम

शोधसार, निष्कर्ष एवं सुझाव

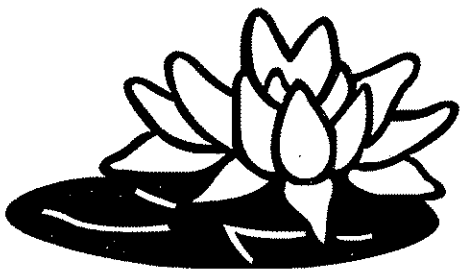

अध्याय–पंचम

शोधसार, निष्कर्ष एवम् सुझाव

5.1 भूमिकाः–

प्राथमिक शिक्षा व्यक्ति की बुनियादी आवश्यकता है जो उसे पूर्ण मनुष्य बनाने में सहयोग देती है, उसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करती है। यह शिक्षित जनशक्ति ही देश का वर्तमान व भविष्य सँवारने का बीड़ा उठा सकती है, संक्षेप में कहा जा सकता है कि शिक्षा का कार्य पुरानी परिपाटी को नई दिशा प्रदान कर नवीन आदर्शों की स्थापना करना है।

मानव प्रतिभा के विकास में शिक्षा की अहम् भूमिका है और शिक्षा-तन्त्र की प्रभावोत्पादकता पूर्णतः अध्यापकों पर आधारित है। इसीलिए शिक्षण के विभिन्न आयामों में शिक्षक शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण है। व्यक्ति बालक के समग्र विकास में शिक्षक उस धुरी के सदृश होता है जिसका प्रभाव बालक के व्यक्तित्व पर स्पष्ट परिलक्षित होता है। सच्चे एवम् योग्य गुरू की आवश्यकता तो प्राचीन काल से ही मानी जाती आयी है। श्रेष्ठ गुरू के संपर्क में प्राप्त शिक्षा ज्ञान के प्रकाश को निरंतर बढ़ाती रही है और उसके विपरीत स्थिति अज्ञानता के गर्त में ले जाती है। हमारा प्राचीन इतिहास भी इस बात की पुष्टि करता है कि जितने भी धर्म सुधारक या समाज सुधारक जैसे ईसा, गाँधी, बुद्ध, मोहम्मद, चैतन्य, कबीर हुए वे मूल अर्थ में सच्चे शिक्षक थे, जिनके संदेश मानव जाति के कल्याण का एक अंतरंग हिस्सा है।

राष्ट्र के निर्माण की प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका प्राचीन काल से ही महत्वपूर्ण देखी गयी है और भविष्य में भी देखी जाती रहेगी। इससे स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन काल से लेकर वर्तमान काल तक शिक्षक के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। शिक्षा की राष्ट्रीय नीति के अंतर्गत भी शिक्षक की भूमिका को महत्वपूर्ण मानते हुए स्पष्ट रूप से कहा गया है कि – किसी भी समाज में अध्यापकों के स्तर से उसकी सांस्कृतिक, सामाजिक दृष्टि का पता लगाया जा सकता है। कहा गया है कि कोई भी राष्ट्र अपने अध्यापकों के स्तर से ऊपर नहीं उठ सकता।

शिक्षक को शिक्षा प्रक्रिया का प्रमुख बिन्दु मानते हुए, शिक्षक की विभिन्न दशाओं को, सेवा शर्तों को उन्नत बनाने के प्रयास करने चाहिए। शिक्षा जगत से जुड़े शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में भी गुणात्मक सुधार लाने की आवश्यकता है। सरकार व समाज को ऐसी परिस्थितियाँ बनानी चाहिए जिससे अध्यापकों को निर्माण और सृजन की ओर बढ़ने की प्रेरणा मिले, अध्यापन व्यवसाय के प्रति वे उन्मुख हो और इस कार्य से वे परम संतोष प्राप्त करें। ऐसे माहौल के लिए शिक्षकों की स्वायत्तता अत्यंत आवश्यक है। जितनी आज़ादी, इज्ज़त और लचीलापन शिक्षार्थी को चाहिए उतना ही शिक्षक को भी। फिलहाल तो प्रशासनिक ऊँच–नीच एवं नियंत्रण, परीक्षाएँ, पाठ्यचर्या सुधार का केंद्रीकृत नियोजन ये सभी शिक्षक और मुख्य शिक्षक की स्वायत्तता पर तमाम प्रतिबंध लगाते हैं। कहीं पाठ्यचर्या में खुलेपन का अवसर मिलता भी है तब भी शिक्षक इतने आत्मविश्वासी नहीं हो पाते कि वे अपनी स्वायत्तता का ऐसे उपयोग कर लें कि प्रशासन भी अलग तरह से काम करने के कारण खफा न हो। इसीलिए यह जरूरी है कि उनको विकल्प चुनने में और स्वायत्तता को महसूस करने में समर्थन दिया जाए। शिक्षक न केवल आदेश और सूचना प्राप्त करें बल्कि ऊपर बैठे लोगों द्वारा उन निर्णयों को लेते समय शिक्षकों की आवाज़ भी सुनी जाए, जिनसे कक्षा का तात्कालिक जीवन और स्कूल की संस्कृति प्रभावित होते हैं। एक ऐसे वातावरण के विकास की जरूरत है जिसमें अध्यापकों में मिलजुल कर काम करने की भावना का विकास हो, साथ ही विवादों के निपटारे का भी कोई तरीका हो। शिक्षकों की ऐसी तैयारी जरूरी है कि वे बच्चों का खयाल कर सकें और उनके साथ रहना पसंद करें। समाज के प्रति अपना दायित्व समझे और बेहतर विश्व के लिए काम करें।

5.2 शोधसार

शोध का शीर्षक

प्रस्तुत शोध समस्या का शीर्षक प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एवम् व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन है।

शोध के चर

अनुसंधान कार्य के लिए चर के रूप में अध्यापन अभिवृत्ति, व्यावसायिक संतुष्टि तथा लिंग को चयनित किया गया था।

शोध के उद्देश्य

1. प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति का अनुमापन करना।
2. प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि को ज्ञात करना।
3. प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति और व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य संबंध ज्ञात करना।
4. प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति को सकारात्मक एवम् नकारात्मक अध्यापन अभिवृत्ति में वर्गीकृत करना।
5. प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सकारात्मक अध्यापन अभिवृत्ति का व्यावसायिक संतुष्टि के साथ संबंध जानना।
6. प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की नकारात्मक अध्यापन अभिवृत्ति और व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य संबंध ज्ञात करना।
7. प्राथमिक विद्यालयों के महिला एवम् पुरूषों अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति में अंतर ज्ञात करना।
8. प्राथमिक विद्यालयों के महिला एवम् पुरूष अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि में अंतर ज्ञात करना।

न्यादर्श चयन प्रक्रिया

अनुसंधानकर्ता ने न्यादर्श का चयन यादृच्छिक न्यादर्शन विधि से किया है। सुरेन्द्रनगर जिले के तीन तहसील के 15 प्राथमिक विद्यालयों में से 100 अध्यापकों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है। इनमें 55 महिला अध्यापक एवम् 45 पुरूष अध्यापक शामिल किये गये थे।

प्रदत्तों के संकलन के लिए प्रयुक्त उपकरण

अनुसंधानकर्ता ने प्रदत्तों के संकलन हेतु डॉ. एस.पी.अहलुवालिया द्वारा निर्मित प्रमाणिकृत अध्यापक अभिवृत्ति सूची एवम् डॉ. एस.पी.आनंद निर्मित प्रमाणिकृत व्यावसायिक संतुष्टि मापनी का उपयोग किया गया है।

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में प्रदत्तों के विश्लेषण के लिए सहसंबंध–गुणांक, मध्यमान, मानक विचलन एवम् टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

5.3 निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रदत्तों का विश्लेषण तथा विवेचना करने के पश्चात कुछ संप्राप्तियाँ सामने आई जिनके आधार पर निकाले गए निष्कर्ष इस प्रकार हैं:–

1. प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एवम् व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य सार्थक संबंध होता है।
2. प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सकारात्मक अध्यापन अभिवृत्ति होने के बावजूद भी यह आवश्यक नहीं है कि वे व्यवसाय से संतुष्ट हो। प्रस्तुत अध्ययन में अध्यापकों की सकारात्मक अध्यापन अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।
3. नकारात्मक अध्यापन अभिवृत्ति वाले अध्यापक प्रायः व्यवसाय से संतुष्ट नहीं होते हैं। इसीलिए अध्यापकों की नकारात्मक अध्यापन अभिवृत्ति और व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।
4. प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होता है।
5. प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि पर लिंग का कोई असर नहीं होता है।

5.4 सुझाव

1. शिक्षकों की ऐसी तैयारी जरूरी है कि वे सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक संदर्भों में बच्चों को समझ सकें।
2. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम में सिद्धान्त और व्यवहार दोनों का समन्वित रूप होना चाहिए।
3. शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों में साल में एक बार मूल्यांकन के चलन की जगह उसे सतत प्रक्रियागत गतिविधि के रूप में शामिल किया जाना चाहिए।
5. शिक्षक की शिक्षा को स्कूली व्यवस्था की उभरती माँगो के प्रति अधिक संवेदनशील होना चाहिए।
6. अध्यापकों के दृष्टिकोण में बदलाव के संदर्भ में यह आवश्यक है कि शिक्षकों में व्यावसायिकता के विकास के लिए शिक्षक प्रशिक्षण के एक अंतर्भूत मॉडल के विकास को बढ़ावा दिया जाए।
7. वर्तमान में जो समय सेवा काल के दौरान दिए जा रहे प्रशिक्षण के लिए है उसमें से कुछ समय अध्यापकों के सुझाव, समस्या, समीक्षा और चिंतन के लिए दिया जा सकता है।
8. विद्यालयों में सकारात्मक अध्यापन अभिवृत्ति पर आधारित परिसंवाद का आयोजन किया जाना चाहिए, जिससे भावी पीढ़ी की इस गौरवपूर्ण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक सोच विकसित हो।
9. वर्तमान मंहगाई के युग में प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के वेतनमान में भी सुधार की काफी गुंजाइश है। ताकि वे अपनी मूल आवश्यकताओं को पूरा कर सकें और संतुष्ट जीवन जी सकें।
10. शिक्षकों की चयन प्रक्रिया में महत्वपूर्ण बदलाव लाने की अत्यंत आवश्यकता है।
11. शिक्षकों की उचित स्वायत्तता आवश्यक है ताकि वे प्रभावी ढ़ंग से कार्य कर सकें।

12. शिक्षकों के प्रदर्शन को सुधारने के लिए ढाँचागत और भौतिक सामग्री की न्यूनतम उपलब्धता और दैनिक योजना को लचीला बनाने की आवश्यकता है।

5.4 भावी शोध हेतु सुझाव

1. सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों तथा सेवारत शिक्षकों की अध्यापन अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
2. प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एवं शिक्षण प्रभाविता का अध्ययन किया जा सकता है।
3. अध्यापकों की शिक्षण प्रभाविता एवं व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया जा सकता है।
4. बहुश्रेणी शिक्षण वाली शालाओं के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया जा सकता है।
5. विभिन्न स्तर के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति, व्यावसायिक संतुष्टि एवं मानसिक स्वास्थ्य के आंतर संबंधों का अध्ययन किया जा सकता है।
6. आदिवासी आश्रम शालाओं तथा गैर-सरकारी शालाओं के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन किया जा सकता है।
7. बुनियादी तथा उत्तर बुनियादी विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।